ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 मार्च 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११७
युगाब्द-५११७, अंक-८३, वर्ष-९
फाल्गुन मास, विक्रमी २०७३ (मार्च 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषीभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति॥ –ऋ० १। १। १। २

व्याख्यान-[(अग्निः)] हे सब मनुष्यों के स्तुति करने योग्य ईश्वराग्ने! [(पूर्वेभिः)] विद्या पढ़े हुए प्राचीन (ऋषिभिः) मन्त्रार्थ देखनेवाले विद्वान् तथा (नूतनैः) वेदार्थ पढ़नेवाले नवीन ब्रह्मचारियों से (ईडयः) स्तुति के योग्य, (उत) और (नूतनैः) जो हम लोग (मनुष्य) विद्वान् वा मूर्ख हैं, उन से भी अवश्य आप ही स्तुति के योग्य हो। [(स ..... वक्षति)] सो स्तुति को प्राप्त हुए आप हमारे और सब संसार के सुख के लिए दिव्यगुण अर्थात् विद्यादि को कृपा से प्राप्त करो, आप ही सब के इष्टदेव हो॥

सम्पादकीय

युवा छात्रों को सम्भालना आवश्यक

सारी सृष्टि में मनुष्य ही एक मात्र ऐसा प्राणी है, जिसे शब्द का बोध होता है, जो शब्द का उच्चारण कर सकता है, अपने अन्तःकरण में उठते विचारों के प्रवाह को दूसरे मनुष्य तक चहुँचा सकता है। शब्द ही है जिससे मनुष्य ने संसार में अपनी उन्नति के शिखर प्राप्त किये हैं। मनुष्य जीवन में चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को शब्द से ही तो मनुष्य जान पाया है, जान सकता है, और जानेगा। समस्त संसार का ज्ञान, विज्ञान, कला-कौशल, आधुनिक तकनीक, सूचना प्रसारण शब्द के बिना क्या इनकी कल्पना भी की जा सकती है? नहीं! नहीं! नहीं की जा सकती। शब्द से ही भाषा बनती है, वह भाषा चाहे संस्कृत हो, हिन्दी हो, चीनी, जापानी, अंग्रेजी या फ्रेंच या जर्मन, सबके मूल में शब्द ही होते हैं। शब्दों का उच्चारण मानव को मानव का मित्र बनाता है तथा शब्द का ही उच्चारण मानव को मानव का शत्रु भी बना देता है।

धार्मिक-अधार्मिक, आस्तिक-नास्तिक, देशभक्त और देशद्रोही इन समस्त भेदों को शब्दोच्चारण के उपरान्त ही विभाजित किया जाता है। तभी तो महर्षि पतंजली शब्द शास्त्र अर्थात् व्याकरण महाभाष्य में लिखते हैं- 'एक शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुक् भवति' अर्थात् एक भी शब्द यदि अच्छी प्रकार जान लिया जावें, ठीक-ठीक प्रयोग किया जावें तो स्वर्ग लोक में कामधेनु होता है, अर्थात् कामनाएं पूर्ण करने वाला होता है। हमारे देश में हमारे आर्य पूर्वज ऋषि, मुनि, विद्वान आचार्यगण इस शब्द महात्म को, रहस्य को जानते थे, तभी तो 'अथ शब्दानुशासनम्' यह सूत्र लिखकर उन्होंने विशाल शब्द शास्त्र में शब्द के साधु-असाधु होने पर लाभ-हानि का विस्तृत वर्णन किया है। संसार भर में ऐसी गूढ़, सूक्ष्म और विस्तृत चर्चा अन्यत्र कहाँ मिलेगी? कहीं नहीं।

लेकिन आर्य! आर्याओं! दुर्भाग्य ही कह सकते हैं कि जिस देश के महान पूर्वजों ने इतना सब कुछ किया व दिया हो उस देश की वर्त्तमान पीढ़ी भाषा, भावना के क्षेत्र में कंगाल हो गयी हो, और वह भी स्वतन्त्रता मिलने के उपरान्त, सत्तर वर्ष बीत जाने पर भी। अब परिणाम सामने हैं। देश के पाँच राज्यों के चुनाव अभी-अभी बीत रहे हैं, क्या भाषा हमारे देश के कर्णधार नेताओं के श्रीमुख से निकली है? किस प्रकार उन्होंने अपने विरोधियों पर अपशब्दों का प्रयोग किया है? यह देश के लोगों ने ध्यान से सुना है।

दूसरी ओर हमारे देश की भावी पीढ़ी, जिसे देश का भाग्य कहा जाता है, भावी देश निर्माता कहा जाता है, जिन्हें बुद्धिमान और विद्वान बनाये जाने हेतु उच्चशिक्षा दी जा रही है, परिवार के लोग उनके लिए अपनी सुख-सुविधाओं से अधिक सुख-सुविधा देने का प्रयास करते हैं, समाज भी विद्यार्थी कहकर उनका सम्मान करता है, सरकार भी उनके लिए नाना प्रकार की सुविधाएं प्रदान करती है और कुछ के लिए तो विशेष ही, और करे भी क्यों न, आखिर वे ही तो सच्ची सम्पत्ति कहलाते हैं, वे ही तो राष्ट्र का भविष्य हैं। लेकिन कैसा दुर्भाग्य है कि वे ही भावी भाग्यविधाता देशद्रोही

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

घोष (नारे) कर रहे हैं और वह भी अपने देश के मूर्धन्य विश्वविद्यालयों के प्रांगणों में! आश्चर्य! महान आश्चर्य है!!

किन्तु प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वे छात्र ऐसा क्यों कर रहे हैं? वे क्या चाहते हैं? उन्हें इससे क्या प्राप्त होने वाला है? आखिर उन्हें सवा सौ करोड़ देश वासियों के देश में क्या भय नहीं लगता? क्या लज्जा नहीं आती? नहीं। क्योंकि उन के लिए यह सब नित्यकर्म है, वह हर रोज यही सब करते हैं, कभी मस्ती में, कभी प्रसन्नता में, कभी गम में, कभी निराशा में। क्योंकि शिक्षा के साथ एक अभिन्न जीवनमूल्य जुड़ा था संस्कार, और संस्कार ही बाँधता था अनुशासन में। अनुशासित युवक-युवती कुछ भी करने से पूर्व अपने परिवार, समाज, राष्ट्र के बोरे में सोचते थे, क्योंकि उन्हें सोचने पर विवश किया जाता था। परिवार के नियम कठोर थे, समाज परस्पर एक दूसरे के साथ बंधा रहता था, गलत कार्य करने वाले व्यक्ति को कोई भी रोक सकता था, टोक सकता था, यहाँ तक कि छोटा-मोटा दण्ड भी दे सकता था, शिक्षक का छात्रों पर पूरा अधिकार था। माता-पिता आदि समझाने में, नियम के उल्लघंन को रोकने में विवशता अनुभव करते तो वे छात्र को यही कहते थे कि अब तुम्हारे गुरुजी से मिलना पड़ेगा, तुम्हारे विद्यालय में आना पड़ेगा। अध्यापक स्वयं में अनुशासित, परोपकार प्रिय, त्यागमय जीवन जीने में विश्वास रखने वाले सदाचारप्रिय संयमी होते थे। बहुत से ऐसे थे जिनका नाम भी छात्रों के लिए श्रद्धास्पद आदरणीय होता था, विद्यालय शिक्षा तक यह अधिक था, किन्तु विश्वविद्यालय में भी वर्त्तमान जितनी उच्चश्रंख्लता की कल्पना नहीं की जा सकती थी। परन्तु जब हमने, हमारी शिक्षा प्रणाली, हमारी भाग्य विधाता सरकारों ने ही हमारी मर्यादाएं, परम्पराएं, हमारे सर्वश्रेष्ठ जीवनमूल्य ही छिन्न-भिन्न कर दिये हों, अध्यापक, आचार्य, प्राचार्य जब निरीह हों, स्वयं भी असयंमित-अमर्यादित जीवन जीने के अभ्यस्त हों, नास्तिक (कम्युनिस्ट) हों, उनकी व उनके छात्रों की स्वच्छंदता इस हद तक हो 'मैं क्या खाऊं-मेरी मर्जी, मैं क्या बोलूं-मेरी मर्जी, मैं क्या पहनूं-मेरी मर्जी, मैं कहाँ जाऊ-मेरी मर्जी, मैं क्या व कुछ भी करूं-मेरी मर्जी' जैसे नारे चारों ओर सुनाई देते हों परिवारों में, समाज में, विद्यार्थियों में, शिक्षकों में, नेताओं में, अभिनेताओं(नट-नटईयों) में, तब हम कैसे समाज की कल्पना कर रहे हैं? कैसे छात्रों का निर्माण करेंगे?

कहाँ से 'पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल' होगें, 'श्रीराम-कृष्ण-हनुमान' बनेंगे? देश निर्माता भाग्य विधाता बनेंगे? यह कभी संभव नहीं! यह रोग दिन-प्रतिदिन फैलता ही जायेगा और ऐसा फैलेगा कि किसी बाहरी आक्रमण की आवश्यकता ही न रहेगी, हम परस्पर ही मर-कटकर समाप्त हो जायेंगे। एक ओर तथा-कथित राष्ट्रवादी होंगे, दूसरी ओर स्वेच्छावादी नास्तिक वामपंथी होंगे, न इनको जीवन सिद्धान्तों का बोध न उनको। बस कुछ समय तक यह अवश्य सम्भव है कि राष्ट्र के प्रति थोड़ी-थोड़ी भावना रखने वाले इन युवाओं को अपने श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का बोध करा दिया जाए तो से सम्हल सकते हैं, नारों से ऊपर उठकर सिद्धान्तवादी बन सकते हैं, संयमित जीवन जीने के धनी आदर्शवादी हो सकते हैं। लेकिन यदि जीवन इसी प्रकार सन-सनी पूर्ण खबरों में बीत गया, नेताओं की हवा में, लहर में, चला गया तो कुछ भी हाथ न लगेगा। इसलिए सावधान!

आर्य! आर्याओं! इस संक्रान्तिकाल में पुरुषार्थ करो! अपनी संतानों को सम्भालना प्रारम्भ करो, उन्हें आर्यविद्या दो, आर्य संस्कार दो, मार्यादित जीवन का पाठ पढ़ाओ और अपने तक व अपनी पढ़ाई और अपनी उन्नति तक सीमित मत रहने दो। अपितु उन्हें प्रेरित करो कि वे अपने सहपाठियों को, साथियों को, मित्रों को भी आर्य(श्रेष्ठ) बनावें। शीघ्र ही विश्वविद्यालयों में आर्य छात्र बढ़ें, इसलिए सभी आर्यजन अपना ध्यान छात्रों पर भी केन्द्रित करें।

मात्र नारेबाजों की निन्दा करने से, भर्त्सना करने से, वॉट्सऐप पर फेसबुक पर, ट्विटर पर अपना अभिमत लिखने से कुछ न होगा, अपितु जो आपके आपने-अपने सम्बन्धियों के बालक-बालिकाएं विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं उन्हें सम्भालिए! और जो पढ़ा रहे हैं उन्हें भी सम्भालिए! जो शीघ्र ही प्रवेश लेकर पढ़ने जाने वाले हैं, उन्हें अभी से सम्भालिए! आर्य विद्या दीजिए, आर्यविचार दीजिए, ऐसा दुर्धष बनाइए कि जे॰एन॰यू॰ सुधारा जा सके, डी॰यू॰ सुधारा जा सके, सारे देश के छात्र और शिक्षक संस्कारित किये जा सकें। क्योंकि आर्य विद्या के बिना इसका कोई समाधान नहीं है।

हमारा 'जय आर्य और जय आर्यावर्त्त' का उद्घोष इन सबके सुधार का, उन्नति का उद्घोष है, जिसे सार्थक करने से ही सब समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान होगा। अवश्य होगा। धैर्य पूर्वक दृढ़ता के साथ पूर्ण पुरुषार्थ तीव्रगति से करना परम आवश्यक है।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना अन्य माध्यमों से आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ समय पर निर्धारित कर अधिकारियों से अनुमति ले लेवें।

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्कदूरभाष
1.	सरकारी विद्यालय, बरगट थालीपुर, बबैन, कुरुक्षेत्र	11-12 मार्च	आर्य देवीदयाल, आर्य अभिषेक 9813117794,8929513132
2.	आर्य समाज मॉडल टाऊन, करनाल, हरियाणा	11-12 मार्च	आर्य राजकुमार 9416368474
3.	आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81	12-13 मार्च	आर्य सुरेश 9999645546
4.	आर्य समाज, मॉडल टाऊन, पानीपत हरियाणा	18-19 मार्च	आर्य रवि गोयल 9896000406
5.	आर्य समाज, शास्त्री नगर, मेरठ, उत्तर प्रदेश	18-19 मार्च	आर्य अजीत 8923500700
6.	आर्यसमाज भवन, गंज, सिहोर, मध्यप्रदेश	18-19 मार्च	आर्य ऋतेश 9827068180

संगठन का महत्व तथा आवश्यकता

-आचार्य सतीश

सत्य सिद्धान्तों को धारण करके ही मनुष्य व्यक्तिगत व परिवारिक उन्नत्ति करता है। सत्य सिद्धान्तों को धारण करके व्यक्ति जब इन्हें प्रचारित-प्रसारित व स्थापित करता है तभी कोई समाज व राष्ट्र, सक्षम व सबल बनता है। इसलिए सिद्धान्त यही है कि हमें सिद्धान्तों को महत्व देना चाहिए, व्यक्ति को नहीं। यही परम्परा हमारे ऋषियों की रही है, जिन्होंने सत्य सिद्धान्तों को व्याखित किया है। इसलिए सिद्धान्त को सर्वोपरि रखा गया न कि किसी व्यक्ति को। लेकिन व्यक्ति व परिवार की उन्नत्ति को भी स्थायी व उपयोगी बनाने के लिए समाज व राष्ट्र का भी उन्नत्त होना आवश्यक है। जब सिद्धान्तों को प्रचारित-प्रसारित व प्रतिस्थापित करके समाज व राष्ट्र में व्यापक करने की आवश्यकता होती है तो उसके लिए संगठित प्रयास ही सफलीभूत होते हैं। किये गये कार्य की प्रभावशीलता, सार्थकता व उसे परिमाणदायी बनाने तथा स्थायित्व प्रदान करने के लिए संगठित होना व संगठन के साथ मिलकर चलना आवश्यक है, संगठन के निर्देशों का पालन करना आवश्यक है तथा संगठन की आवश्यकता अनुसार व्यक्तिगत हित को छोड़कर संगठन हित के लिए कार्य करना आवश्यक है। अत: इस सिद्धान्त का पालन करते हुए भी कि किसी व्यक्ति से नहीं-सिद्धान्त से जुड़ें, संगठन के अनुसार चलकर ही कार्य की सार्थकता है, और संगठन का निर्देशन सर्वमान्य होना चाहिए। संगठन जड़ है, उसे व्यक्ति ही चलाते हैं अत: संगठन के निर्देशों का पालन करना ही चाहिए। सिद्धान्त भी जड़ हैं, उनको प्रचारित-प्रसारित व प्रतिस्थापित करने का कार्य भी व्यक्ति ही संगठन के माध्यम से करते हैं, अत: संगठन हम सबके लिए अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। समाज व राष्ट्र को उन्नत बनाने का कार्य सार्वजनिक है, व्यक्तिगत नहीं है, सर्वहित का कार्य है, कुछ के हित का नहीं है। इसीलिए ऋषि दयानन्द ने आर्यों के लिए प्रत्येक सर्वहित के कार्य में परतन्त्र रहने का आदेश आर्यसमाज के नियमों में दिया है।

कुछ व्यक्ति सोचते हैं कि हम भिन्न-भिन्न लोगों के साथ मिल-जुलकर रहें, सबसे जुड़े रहें, सबसे विद्या प्राप्त करते रहें, जो भी काम कर रहा है और हमारे अनुकुल है उसको मिलकर सहयोग भी करते रहें, और कार्य अपनी इच्छा व सुविधानुसार भी करते रहें। किसी संगठन, किसी व्यक्ति, किसी समूह व किसी नियम में बन्धकर न रहें। ऐसे व्यक्ति सार्थक कार्य करने में सफल नहीं हो सकते हैं, ऐसे व्यक्ति कुछ काल के लिए अपनी व्यक्तिगत व पारिवारिक उन्नति तो कर सकते हैं, लेकिन समाज व राष्ट्र के लिए उनका विशेष उपयोग नहीं होता है, अपने स्वार्थ की पूर्ति तो कर सकते हैं, लेकिन राष्ट्र की उन्नति में उनका प्रयास कोई प्रभाव नहीं डालता है। आर्य समाज में यह प्रवृति लम्बे काल से चल रही है और इसके कारण से आर्य समाज को बहुत हानि पहुँची है। व्यक्तियों की उन्नति हो गई, कुछ समय के लिए अपने स्वार्थ की पूर्ति भी हो जाती है लेकिन संगठित प्रयास के अभाव में उनका कार्य उनके काल में ही समाप्त भी हो जाता है। इसके अनेकों उदाहरण मिल जाएंगे।

इसलिए संगठन के साथ मिलकर, उसके निर्देशों के अनुसार चलकर, व्यक्तिगत हित को त्यागकर, संगठन के उद्देश्यों के अनुसार कार्य करके ही अपने कार्य को स्थाई बनाया जा सकता है और उच्च लक्ष्य को भी प्राप्त किया जा सकता है। यदि उद्देश्यों को न समझ पाएं तो संगठन के ही वरिष्ठ लोगों से उद्देश्यों को समझने का प्रयास करें। धारा को देखकर विचार धारा को बदल लेना और उसी में बह जाना बहुत हानि पहुँचाता है और व्यक्ति फिर अपना रास्ता ही भटक जाता है। अनेकों युवक थोड़ी सी विद्या लेकर ही समझने लग जाते हैं कि इसी विद्या से हम पता नहीं कितना बड़ा कार्य कर ले जावेंगे, न हमें और विद्या की आवश्यकता है और न हमें संगठन की आवश्यकता है, हम अकेले ही प्रयाप्त हैं। मूल से छूटकर हो सकता है एक बार उनको ऐसा लगे कि हम बहुत कार्य कर ले गये लेकिन वह कार्य इसी प्रकार का रह जाता है जैसे कच्ची सड़क पर धीरे-धीरे चलने पर भी धूल का गुब्बार तो उठता है लेकिन दूरी तय नहीं होती, और पक्की सड़क पर बिना धूल उड़ाये भी अधिक दूरी तय हो जाती है। अत: सिद्धान्तों के साथ-साथ संगठन की पक्की सड़क होना भी परम आवश्यक है, अन्यथा तो सिद्धान्त रूपी गाड़ी भी कच्ची सड़क पर जल्दी ही तहस-नहस हो जाती है। व्यक्ति केवल अपनी लोकैष्णा व स्वार्थ पूर्ति में ही लग जाता है। और यह भी सिद्धान्त है कि संगठन आगे बढ़ता है तो व्यक्ति की उन्नति होती है। **बिना संगठन के व्यक्ति अकेला संघर्ष करता है-अपने बचाव के लिए भी और उन्नति के लिए भी। जबकि संगठन के साथ होने पर बचाव का कार्य संगठन करता है और उन्नति के लिए पुरुषार्थ में सहयोगी मिलते हैं वे अलग से,** और यदि आर्यों का संगठन हो तो कहने ही क्या। वहां तो 'इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुर:' का वेद का आदेश ही है। अत: आर्यों-आर्याओं! उद्देश्य से भटकें नहीं, अन्यथा कुछ हाथ न लगेगा। संगठित होकर प्रयास करेंगे तो सफलता मिलगी ही। 'संगच्छध्वं' के बिना सफलता मिल ही नहीं सकती। साथ मिलकर चलने से ही सफलता मिलती है। और यह भी ध्यान रखें कि अपने अंहकार व स्वार्थ का त्याग किए बिना संगठन के साथ मिलकर चला भी नहीं जा सकता है। जब ऋषि का आदेश है कि प्रत्येक सर्वहित कार्य में परतन्त्र रहें, वेद का आदेश है कि 'संगच्छध्वं' के बिना उन्नति नहीं, तो फिर क्यों इन आदेशों का पालन न करके हम वेद का उल्लघंन करें। जो इन सिद्धान्तों को समझता है, जो योग्य है वह संगठित रहता भी है और योग्य व्यक्तियों के साथ ही संगठन आगे बढ़ता भी रहेगा, अब तक निश्चित रूप से बढ़ता भी रहा है।

हम अल्पकालिक नहीं अपितु दीर्घकालीन लक्ष्यों को ध्यान में रखें, यदि अल्पकाल में असफलता भी मिलती है तो वह दीर्घकाल की सफलता का आधार ही बनेगी, यदि हम निरन्तर कार्य करते हैं तो। इसलिए संगठन के उद्देश्ययों के साथ मिलकर उसी के लिए कार्य करेगें तो कार्य का अवश्य महत्व होगा अन्यथा स्थिति वही होगी कि चौबे जी गए थे छब्बे जी बनने, दूबे जी बनकर रह गए। अत: व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक की उन्नति सिद्धान्तों पर चलते हुए संगठन के साथ मिलकर कार्य करने से ही हो सकती है।

॥ ओ३म्। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्... ॥

आर्य प्रशिक्षण महासत्र

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

स्थान : जाट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, (नजदीक जाट स्कूल, गेट न.-5) करनाल रोड़, कैथल (हरियाणा)

दिनांक 25-26 मार्च, 2017 (शनिवार-रविवार)

समय : प्रातः 8 बजे से सांयकाल 7 बजे तक

आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद से ग्रसित है। प्राकृतिक वातावरण भी दूषित हो भयंकर रूप ले रहा है, शस्य श्यामला धरती कहीं खो गयी है, युवा वर्ग अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं और उदात्त जीवन मूल्यों का तिरस्कार कर पाश्चात्य भोगवादी प्रवृतियों का अनुकरण कर नशा, रोग और नास्तिकता में फंसता जा रहा है। अन्धविश्वास एवं रूढ़िवादी पररम्पराएं निरीह जनता का शोषण करती ही जा रही हैं, राष्ट्र को छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। ऐसी भयावह एवं चिन्तनीय परिस्थितियों में सत्य क्या है ? धर्म क्या है? आध्यात्मिक ज्ञान क्या अप्राप्य और दुरूह है ? सच्चा योग क्या है ?, क्या सब कुछ सत्य है ? क्या सभी भगवान हैं ? राष्ट्र की परिस्थितियाँ और हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य क्या है ? विज्ञान और अध्यात्म युक्त आधुनिक सफल जीवन जीने की पद्धति क्या है ? इन और इन जैसे अनेकों प्रश्नों के यथार्थ उत्तर को यदि जानना चाहते हो तथा सम्पूर्ण मानवीय गुण युक्त जीवन को सफलता पूर्वक जीने की इच्छा यदि आपके भीतर है तो आइए मात्र दो दिन का समय निकालिए! 25 - 26 मार्च 2017 (शनिवार-रविवार) को हमारे सबके सौभाग्य से हरियाणा की ऐतिहासिक भूमि कैथल शहर में 'आर्य प्रशिक्षण महासत्र' का भव्य आयोजन हो रहा है, जिसमें हजारों लोग एक साथ विज्ञान सम्मत सत्य सिद्धान्तों को जानकर हृदयंगम करेंगे, यह सत्य विद्या एक लाख से भी अधिक लोगों के द्वारा आत्मसात(ग्रहण) की जा चुकी है। यह महासत्र आपके लिए अद्भुत, अभूतपूर्व और जीवनपथ को सत्यपथ की ओर ले जाने वाला होगा। जिन-जिन को आप उच्च, श्रेष्ठ, बुद्धिसम्पन्न और राष्ट्रभक्त बनाना चाहते हैं, उन-उन को साथ लाकर इस लघु गुरुकुल में आर्यों की महान विद्या को ग्रहण करें-करावें। यह सत्र सभी के लिए समान (पन्थभेद,जातिभेद, प्रान्तभेद, रंगभेद और ऊँच-नीच भेदभाव से मुक्त) और निःशुल्क रहेगा। आप सादर आमन्त्रित हैं।

आवश्यक नियम-

(1) यह सत्र पुरुषों एवं महिलाओं दोनों के लिए है ।
(3) पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन) कराना अनिवार्य है। ऑनलाईन के लिए देखें-www.aryanirmatrisabha.com
(4) सत्रार्थी सत्य जिज्ञासु, भावनाशील और राष्ट्रप्रेमी होना चाहिए।
(5) दोनों दिन हल्के वस्त्र, पहनकर आवें एवं डायरी और पेन साथ अवश्य लायें।

निवेदक : सुरेन्द्र आर्य (अध्यक्ष) 9813817610 | आर्य अमनदीप (मंत्री) 7876854056 | प्रवीन आर्य (कोषाध्यक्ष) 8901692574

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, कैथल

-ऋषि दयानन्द का संदेश-

जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में धर प्रवृत होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं।

चैत्र मास का तिथि पत्र

13 मार्च-11 अप्रैल 2017 **चैत्र** ऋतु- वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
उ० फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
कृष्ण प्रतिपदा	कृष्ण द्वितीया	शुक्ल तृतीया	कृष्ण चतुर्थी	कृष्ण पंचमी	कृष्ण षष्ठी	कृष्ण सप्तमी
13 मार्च	14 मार्च	15 मार्च	16 मार्च	17 मार्च	18 मार्च	19 मार्च
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
कृष्ण सप्तमी	कृष्ण अष्टमी	कृष्ण नवमी	कृष्ण दशमी	कृष्ण एकादशी	कृष्ण द्वादशी	कृष्ण त्रयोदशी
20 मार्च	21 मार्च	22 मार्च	23 मार्च	24 मार्च	25 मार्च	26 मार्च
पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती	अश्विनी	भरणी/कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
कृष्ण चतुर्दशी	कृष्ण अमावस्या/ प्रतिपदा	शुक्ल द्वितीया	शुक्ल तृतीया	शुक्ल चतुर्थी	शुक्ल पंचमी	शुक्ल षष्ठी
27 मार्च	28 मार्च	29 मार्च	30 मार्च	31 मार्च	1 अप्रैल	2 अप्रैल
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू० फाल्गुनी	उ० फाल्गुनी
शुक्ल सप्तमी	शुक्ल अष्टमी	शुक्ल नवमी	शुक्ल दशमी	शुक्ल एकादशी	शुक्ल द्वादशी	शुक्ल त्रयोदशी
3 अप्रैल	4 अप्रैल	5 अप्रैल	6 अप्रैल	7 अप्रैल	8 अप्रैल	9 अप्रैल
हस्त	चित्रा	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसंवत्सर प्रारम्भ आर्य समाज स्थापना दिवस	शहीदी दिवस			श्रीरामचन्द्र जयन्ती चैत्र शुक्ल नवमी
शुक्ल चतुर्दशी	शुक्ल पूर्णिमा					
10 अप्रैल	11 अप्रैल					

Rishi Dayanand - His Life And Work
-His Early Life-

-Saroj A rya, Delhi

"Why do you ask this question?"

"How can God allow mice to run over his body?"

"This is only an image of God who cannot be seen face to face in this age of Kaliyuga."

The angry tone of Karsan Tiwari silenced Mool Shankar but not the questions of this mind. This reply could not calm down the curious boy.

"If this is only an image, what claim has it on our homage?" he thought to himself.

The explanation of the father had not carried conviction to the inquisitive mind of Mool Shankar. He left the temple and went home. Once he was in doubt he did not accept anything but only truth. He was very hungry, he had a hearty meal, and went to bed to enjoy an undisturbed sleep for the rest of the night.

Early next morning the young rebel received a stern rebuke at the hands of his father but it failed to put out the light that had been kindled in him.

He requested his mother and uncle that he want to study. He insisted that he has no interest in all these rituals have nothing interesting for him. They persuaded Amba Shankar for this and the boy was sent to a Panditji (the teacher who taught scripturs and perform religious duty himself and help others) in nearby village.

Mool Shankar now devoted himself to his studies. He read with the Panditji-Nighantu, Nirukta, Purva Mimansa(these are the books of grammar, etymology and philosophy and have no imaginary stories and deities etc.) and some other books. The affair in the temple would from time to time come in his thoughts, and set him thinking for hours over the issue.

About this time something happened which stirred the inquisitive boy.

One day he was at his friend's house, when a servant brought the news that his sister had been taken ill with cholera. He hurried home with others. In spite of the best efforts to save her by physicians, her condition grew worse and worse and succumbed in a few hours. All were wailing and weeping in the house, but Mool Shankar was silent and deeply in thoughts. His loving sister whom he had seen hale and hearty a few hours ago was lying dead like a stone. Mool Shankar stood petrified. His grief was too deep for tears. His father, mother and others were hurt over his heartlessness.

Mool Shankar's grief was too great to be relieved by weeping. He stood in a deep thoughts, when everyone else was filling the chamber of death with cries and lamentations. Little did they know that this young man of sixteen, apparently so unmoved had been moved deeply, and brooding over the methods to get rid of life's miseries. "Shall death lay its icy hands on me, too, one day? What must one do to meet the challenge of death and to gain immortality?" Such questions were agitating the mind of our young hero. He left the room, much to the relief to those whose seeming heartlessness was making him uncomfortable, and threw himself on his bed. He lay buried in his thoughts saying to himself again, "Is there any remedy for this instability of life? Is there no escape from death?" The Morning found Mool Shankar a changed being. The death had brought about a transformation in his outlook on life.

To be continue...

जीन्द व सोनीपत में आर्यसद् की बैठकें

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की देन

मेरी आयु 30 वर्ष का हो चुकी थी, परन्तु सत्य की प्राप्ति न हुई थी। सत्य हेतु मैंने तांत्रिकों को देखा मगर सत्य न मिला, मस्जिदों के मौलवियों के पास गया परन्तु सत्य न मिला, मन्दिरों की खाक छानी परन्तु सत्य न मिला, लगातार 15-16 वर्षों तक मूर्तियों को नहलाया-धुलाया, खिलाया-पिलाया परन्तु ईश प्राप्ति का स्वप्न तो बस स्वप्न ही रह गया। जहाँ भी जाता निराशा ही हाथ लगती। निरन्तर इसी प्रयास में रहता कि यदि मैंने सुकर्म किए होंगे तो अवश्य ही ईश्वर कृपा करेंगे और अपनी प्राप्ति का सच्चा मार्ग दिखलावेंगे।

यह संवत् 2070 सन् 2014 की आरम्भ की बात है कि मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि जिस सत्य की खोज में तुम हो उसके लिए गुरुकुल टटेसर में एक धर्म चर्चा का कार्यक्रम होता है जो तुम्हारे लिए ठीक रहेगा। यह तो पता चला परन्तु तिथि और समय नहीं पता चला। तभी ईश कृपा से मेरी भेंट आर्य वरूण जी से हुई जिन्होंने मुझे से दो दिवसीय आर्य प्रशिक्षण सत्र करने के लिए प्रेरित किया और सौभाग्य से मेरे द्वारा संचित शुभ कर्मों द्वारा 19-20 मई 2014 को बवाना में पिरामिड़ एकेडमी में मैंने जीवन में प्रथम बार सत्य को प्राप्त किया। जब 1-2 जून 2014 को ही आचार्य हनुमत्प्राद जी के सत्र में गया तो मानो उस सत्र में तो इतना आनन्द आया कि जीवन सार्थक ही हो गया। सत्रोपरान्त मैंने संध्या, उपासना तथा स्वाध्याय आरम्भ किया और जब इस योग्य हो गया कि दूसरों को इस ज्ञान के बारे में अवगत कराऊँ तो मैंने लोगों को प्रेरित करना आरम्भ कर दिया। 25/01/2015 से हमने गाँव में अबाध साप्ताहिक वैदिक यज्ञ प्रारम्भ कर दिया, जिसके बाद कार्य में और प्रगति आई और इसी के फलस्वरूप 21 मार्च 2015 को हमने निर्मात्री सभा के तत्वाधान में अपने पूजनीय आचार्यगण हनुमत्प्रसाद जी, सतीश जी व राजेश जी के निर्देशानुसार 'आर्यसमाज करालाा मजरी' की स्थापना की । गत दो वर्षों में इस समाज ने गाँव में 3 आर्य प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया है एवं सत्रों द्वारा लगभग 100 पुरुषों एवं महिलाओं को आर्य/आर्या बनाया है।

इस महान कार्य में मेरा सहयोग करने वाले आर्यों में आर्य वरूण, आर्य प्रदीप, आर्य मुकेश, आर्य प्रदीप, आर्य दीपान्शु, आर्य सुरेश चन्द्र जी, आर्य मोहित, आर्य आशीष जी एवं आर्य भरत जी का विशेष योगदान रहा।

वर्ष 2016-17 में आचार्य प्रचारक की कक्षाओं में प्रवेश पाकर और ज्ञान वृद्धि की है और मैं हृदय से आचार्य परमदेव मीमांसक जी का आभार व्यक्त करता हूँ, उन्होंने ही आर्य प्रशिक्षण का ऐसा पाठ्यक्रम बनाया, जिससे तीव्रगति से देश के युवा आर्य बन (श्रेष्ठ) रहे हैं। पुनः धन्यवाद करता हूँ अपने पूज्य आचार्यगणों को जो अबाध गति से इस आर्यकरण के कार्य को करते जा रहे हैं और सभी आर्यों का भी धन्यवाद करता हूँ जो इस अभियान में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सहयोगी रहे हैं। इसी इच्छा के साथ कि हमारा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सफलीभूत हो मैं सबको धन्यवाद करता हूँ। जय आर्य जय आर्यावर्त्त।

-प्रदीप आर्य

प्रधान,आर्यसमाज करालाा मजरी, दिल्ली-81

-ऋषि दयानन्द का निर्देश-

विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्य-असत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हित-अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

ऋषि अनुयायियों के चिन्तनीय विषय

1) यथार्थ मानना, कहना, सुनना यही आर्य कर्म है। सुनिये! आजकल आर्यवीर दलों, युवक परिषदों, आर्य केन्द्रीय सभाओं के संचालक अधिकांश वयोवृद्ध हैं। पिछले 40-50 वर्षों से तथाकथित दलों, परिषदों, सभाओं पर काबिज हैं व उन्हें दूसरों को सौपंने को ही तैयार नहीं। नेताओं से सांठगाठ ही अधिकांश का पेशा है। ये बालकों, युवकों को आर्य सिद्धान्त समझा पाने में असमर्थ हैं। न इच्छा ही रखते हैं। पर पद लालसा, लोकैष्णा के वशीभूत फोटो शेयरिंग, Selfie के माहिर हैं। ऐसे लोगों से आप पूछना नहीं चाहेंगे? कि आप- १) आर्यवीर दल युवाओं को कब सौपेंगे? २) आर्य युवक परिषद में युवा कार्यभार कब सम्भालेंगे? ३) आप पदत्याग किस आयु में करेंगे? अथवा ऐसे जनों के पीछे पीछे नेताजी वाक्यं प्रमाणं कहने वाले युवक क्या आर्यवीर कहे जाँयें?

अब निर्णय आर्यप्रजा करे! कभी हैदराबाद के नवाब को नाकों चने चबवाने वाले आर्यवीर दल को कुछ जनों ने अमरनाथ कांवड़ मंडल की तर्ज पर टंकारा यात्रा मण्डल बना छोड़ा है। क्या आप सहमत हैं ऐसे जनों से जो सीधे-सीधे आर्यद्रोह करते हैं और ताल ठोक कर आर्य होने का ढ़िढोरा पीटते हैं?

2) कुछ लोग पिछले 40-50 वर्षों से प्रांतीय,राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन करते नजर आते हैं, इतिहास उठाकर देखो, वही लोग, वही लेक्चर, वही मंच, वही श्रोतागण? आश्चर्य है ना! पर यह उनकी दृढ़ता ही है कि हताश नहीं होते, निराश नहीं होते, पग हटाते नहीं! सत्यार्थ प्रकाश की घुट्टी ही ऐसी है। ऐसे जनों को नमन, उनकी दृढ़ता को नमन, इस आह्वान के साथ कि आर्यों में अब आगे बढ़ने की इच्छा जागी है, जन-जन को आर्य बनाने की विधि आ गई है। अब मात्र सम्मेलन नहीं, निर्माण भी करें। सावधान! कहीं सम्मेलन करना लत न बन जाये? कहीं सम्मेलन करना राजनेताओं की चाटुकारिता मात्र न कहलाये?

सीखिये! उन आर्य बिस्मिलों से, जो दर-दर जाकर आर्यकरण की अलख जगाते थे, प्रेरणा लीजिए लेखराम व अन्य सरीखे आर्यों से जो गांव-गांव, नगर-नगर हर घर की चौखट को खटखटाते थे। ऐसे आर्य प्रहरियों को करूं मैं कोटि-कोटि नमन। आप भी करें आतिशीघ्र आर्यावर्त्त बने सारा चमन।

-आचार्य अशोक पाल
(महासचिव, रा०आ०नि० सभा, हरियाणा)

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	12 मार्च	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-पू. फाल्गुनी
अमावस्या	28 मार्च	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-उ. भाद्रपद
पूर्णिमा	11 अप्रैल	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-चित्रा
अमावस्या	26 अप्रैल	दिन-बुधवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अश्विनी

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मैंने दो दिन कि कक्षा में काफी अपने धर्म के बारे में जाना। दो दिन की कक्षा में जाना कि हम क्या हैं। वास्तव में हमारा अस्तित्व क्या है। इस सत्र में जाना कि हमने वास्तव में आज तक क्या खोया है। जीवन में पहली बार लगा कि हाँ मन में पहले काफी प्रश्न थे जो इस सत्र में मुझे मिले। इस सत्र में मुझे पता चला कि हम अपना वास्तविक धर्म का मार्ग छोड़कर पूरी तरह भटक गये हैं। धन्यवाद हमें ये दो दिन का सत्र मिला।

इसमें जिस तरह सहयोग हो सकता है मैं करूंगा। मैं ज्यादा से ज्यादा अपने मित्रों तथा अपने घर वालों को इससे जोड़ने का प्रयास करूंगा। मैं भी अपने समाज को सुधारने में अपना योगदान देना चाहता हूँ।

नामः प्रशान्त भाटी, आयुः 20 वर्ष, योग्यता : बी. सी.ए., पता : शहबाजपुर लोनी, गाजियाबाद, (उ० प्र०)

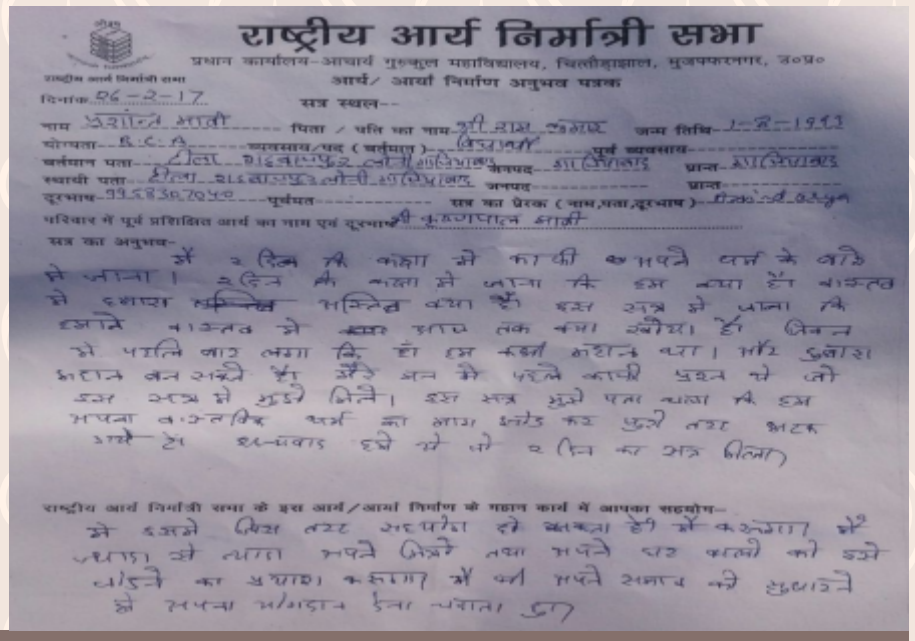

सत्र का अनुभव बहुत अच्छा रहा है। और मुझे यहाँ आकर बहुत बिन्दुओं, और मन की अन्दर बहुत से प्रश्नों का हल हुआ है। देश के बारे में देश प्रेम तथा मनुष्य का नव-निर्माण मनुष्य की दिनचर्या जाना। मूर्ति पूजा एक आडम्बर है, इससे हमारी बुद्धि जड़ हो गयी। और सत्य के मार्ग पर चलकर सत्य को जाना। जिस प्रकार एक बन्द कमरे में अन्धकार होता है, उसी प्रकार हमारे आचार्य ज्ञान दीपक बनकर अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करते हैं। मैं अपनी ज्ञान व शुद्ध शिक्षाओं से लोगों को जागरूक करूंगा।

आपको शत् शत् धन्यवाद एवं नमस्ते।

नामः सुनील पांचाल, आयु : 24 वर्ष, योग्यता : एम.कॉम., पताः बी-216, नाईपुरा चौक लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)

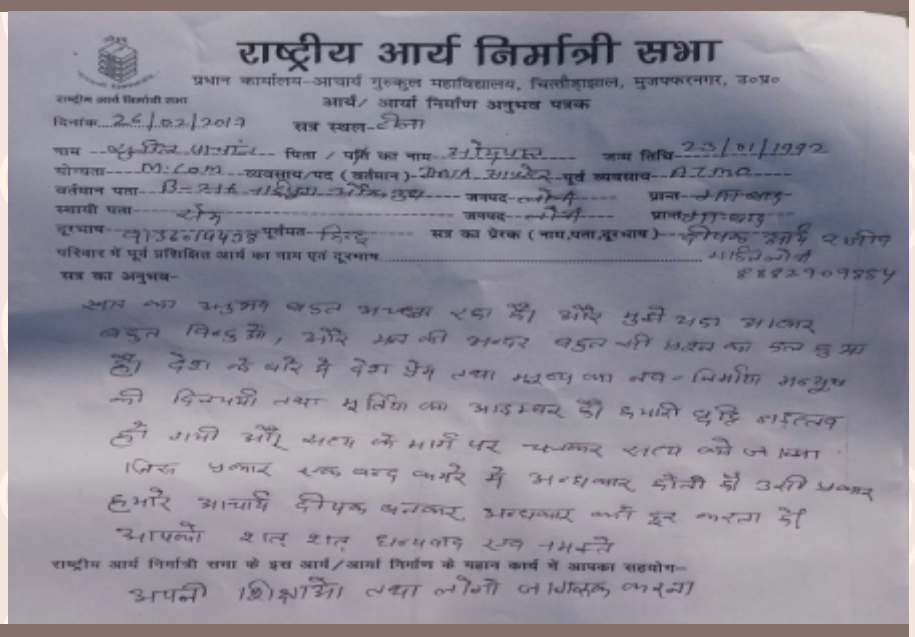

सत्र करने से पूर्व सैकड़ों प्रश्न मन में थे, मैं कौन हूँ, क्यों हूँ, क्या कर रहा हूँ, क्या करना चाहता हूँ, क्या करना चाहिए। परन्तु सत्र के बाद इन सभी प्रश्नों का उत्तर मुझे मिल गया। सबसे अच्छी बात- हम आर्यों में मत-मतान्तर नहीं होता। जो कोई बात हमने कही, उसका पूरा प्रमाण हमारे पास है। हम मत-मतान्तर में विश्वास नहीं रखते। अब जिम्मेदारी मेरे कन्धों पर भी है और मैं इसे आप सब के साथ मिलकर पूरी करूंगा, आर्य बनूँगा, आर्य बनाऊँगा। मेरा अपना देश फिर से आर्यावर्त्त होगा। जय आर्य जय आर्यावर्त्त।

आज और अभी से ही इस महान कार्य में लग रहा हूँ, मैं एक विद्यार्थी हूँ और पूरे तन-मन से इस कार्य को करते हुए प्रचारक, राष्ट्रनिर्माण, क्षत्रियसभा, छात्रसभा और बहुत ही जल्द आर्थिक सहयोग के लिए तैयार हूँ। मैं हर तरीके से तैयार हूँ।

नामः अशोक कुमार, आयुः 20 वर्ष, योग्यताः बी.टेक (द्वितीय वर्ष), पताः गाँव मुकलान, हिसार, हरियाणा

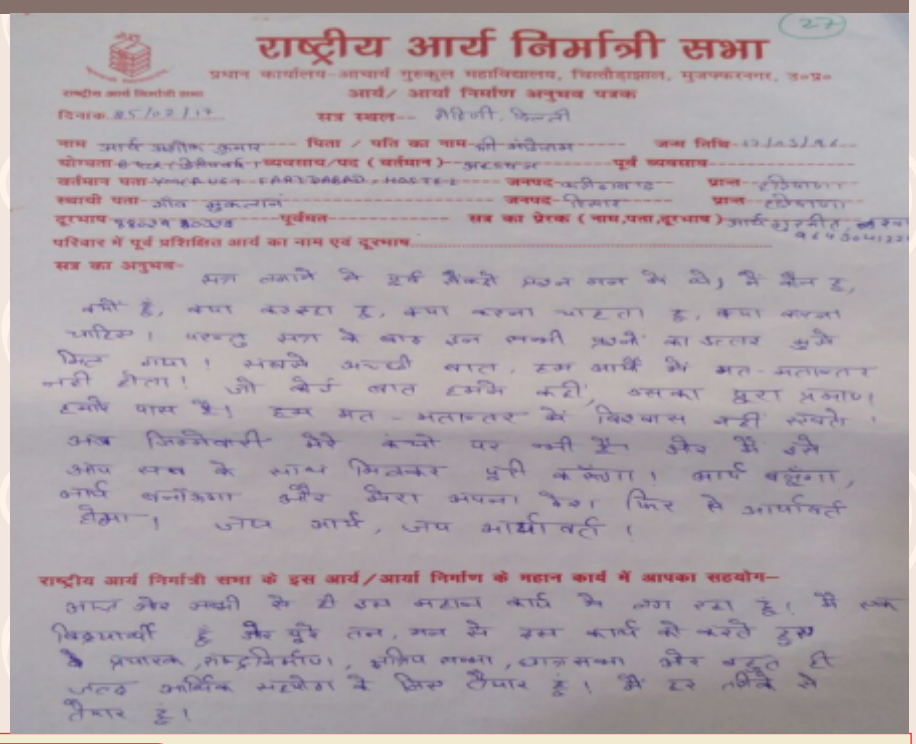

संध्या काल

चैत्र मास, वसंत ऋतु, कलि-5117-8, वि. 2073-4
(13 मार्च 2017 से 11 अप्रैल 2017)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

वैशाख मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(12 अप्रैल 2017 से 10 मई 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

आर्या उपदेशिका कक्षा (उ०प्र०) में उपदेशिकाएं व आचार्या इन्द्रा जी

आर्या उपदेशिका कक्षा (दिल्ली) में उपदेशिकाएं व आचार्या सुशीला जी

आर्या उपदेशिका कक्षा (उत्तरी हरियाणा) में उपदेशिकाएं व आचार्या चन्द्रकांता जी

आर्य प्रचारक कक्षा में प्रचारकों के साथ आचार्य सतीश जी
आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, दिल्ली

विभिन्न विद्यालयों में हजारों छात्र-छात्राओं को वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराते राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के अध्यक्ष आचार्य राजेश जी

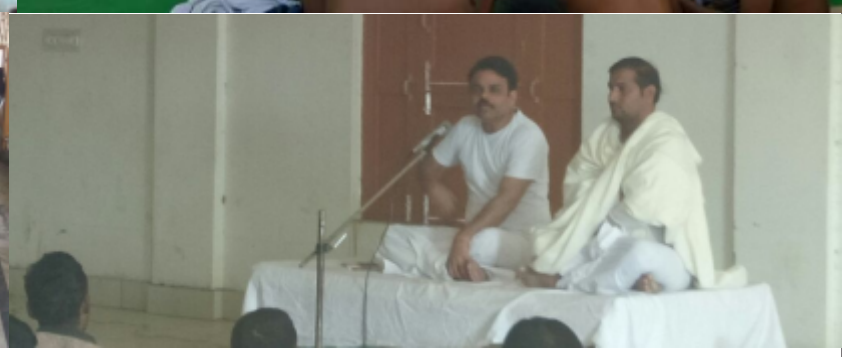

आर्य निर्माणशाला में आर्य निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।